IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समाजीकरण प्रक्रिया मे सहाय्यक अभिकरणों की भूमिका

प्रा.डॉ. आचार्य राजा धोंडीबा
समाजषास्त्र विभाग प्रमुख
नवगण कला और वाणिज्य महाविद्यालय
परली वैद्यनाथ, जि.बीड

समाजीकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक जैविक प्राणी मे सामाजिक गूणों का विकास होता है और वह सामाजिक प्राणी बनता है। समाजीकरण प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति समाज और संस्कृती के बीच रहकर विभिन्न साधनों के माध्यम से सामाजिक गूणों को सिखता है, अतः इसे सिखने की प्रक्रिया भी कहते है। समाजीकरण द्वारा संस्कृती, सभ्यता तथा अन्य अनगिनत विषेषताएँ पीढी दर पीढी हस्तांतरित होती है और जीवति रहती है। समाज से बाहर व्यक्ति, व्यक्ति नहीं है। समाज से पृथक वह असहाय है। समाज से दूर होकर वह चल फिर नहीं सकता, बोलचाल नहीं सकता। समाज के अभाव में व्यक्ति का जीवन यदी असंभव नही तो कठिण एवं दूभर अवष्य है। किंतू समाज कोई ऐसा जादूई करिष्मा नहीं कर देता की जन्म लेते ही बच्चा चलने फिरने लगे, बोलणे चालणे लगे समझणे समझाने लगे। ऐसा तो सामूहिक जीवन के दौरान जीवनपर्यंत चलनेवाली एक प्रक्रिया के द्वारा संभव होता है। इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहते है।[1]

समाजीकरण की परिभाषाः–

1) गिलिन व गिलिन :–

थ्गालिन व गिलिन के अनूसार समाजीकरण से आषय उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा एक व्यक्ती समाज के एक क्रियाषिल सदस्य के रूप में विकसित होता है समूह की कार्यप्रणालियों से समन्वय करता है, उसकी परंपराओंका ध्यान रखता है और सामाजिक स्थितीयों में व्यवस्थापन करके अपने साथिओं के प्रति सहनषक्ती की भावना विकसित करता है।

2) ए. डब्लिव. ग्रीन :–

लोकसम्मत व्यवहारों को सीखने की प्रक्रिया का नाम समाजीकरण है। फिषर के अनुसार समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक व्यवहारोंको सीखता है और उनमे अनुकूल करना सिखता है।

3) जॉनसनः–

"समाजीकरण का तात्पर्य सामाजिक सीख से है जो सीखनेवाले व्यक्ति को अपनी सामाजिक भूमिका निभाने के योग्य बनाती है।"[2]

4) किम्बाल यंगः–

किम्बाल यंग के अनुसार समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रवेष करता है तथा समाज के विभिन्न समूहों का सदस्य बनता है और जिसके द्वारा उसे समाज के मूल्यों और मानकों को स्विकार करने की प्रेरणा मिलती है।[3]

समाजीकरण के तत्व :–

समाजषास्त्रीयोंने समाजीकरण की प्रक्रिया को बडी बारीकी से अध्ययन किया है। उनके अनूसार समाजीकरण की प्रक्रिया के चार तत्व होते है।

1) मनुष्य की जैविकीय विषेषताः–

मनूष्य की अपनी जैविकीय विषेषता है वह कुछ मुल प्रवृत्तियों संवेगो, सामान्य जन्मजात प्रवृत्तियों, इंद्रियों और मस्तिष्क को लेकर जन्म लेता है। इन्ही के आधारपर उसका समाजीकरण होता है इनके अभाव में हम उसका समाजीकरण नहीं कर सकते।

2) सामाजिक अंतःक्रियाएः–

मनूष्य के समाजीकरण के लिये दुसरा महत्वपूर्ण तत्व सामाजिक अंतरक्रियाएँ है। जब तक कोई मनुष्य दुसरे मनूष्य के संपर्क मे नहीं आता और उनके बीच अंतरक्रियाएँ नहीं होती तब तक वह ना तो समाज की भाषा सीख सकता है और ना ही आचरण की विधियाँ इनको सीख कर ही वह जैविक पुरानी से सामाजिक प्राणी बनता है।

3) सामाजिक अंतःक्रियाओं के निष्चित परिणामः–

समाजीकरण के लिये यह भी आवष्यक है की व्यक्ति–व्यक्ति अथवा व्यक्ति समाज के बीच की अंतःक्रियाओं के निष्चित परिणाम होः निरर्थक अंतक्रियायों के समाज सम्मत आचरण नहीं सिखा जा सकता।

4) परिणामों के प्रति स्विकृती–अस्विकृतीः–

जहां क्रियः होगी वहा परिणाम अवष्य होगा चोरों के बीच रहकर बच्चा चोरी करना सीख सकता है परंतू उसे जब यह जानकारी होगी कि यह कार्य समाज द्वारा स्विकृत नहीं है और ऐसा करके वह समाज में समायोजन नहीं कर सकता तो वह उस कार्य को स्विकार नहीं करेगा। समाज द्वारा स्वीकृत आचरण को सीखकर तदअनुकूल आचरण करना ही समाजीकरण होता है।

समाजीकरण प्रक्रिया मे सहाय्यक अभिकरणः–

व्यक्ति मे राजनितिक समझ विकसित करनेवाली समाज मे अनेक संस्थाए होती है। परिवार षिक्षण संस्थाएँ, राजनितिक एवं सामाजिक संस्थाएँ सरकारी प्रक्रिया जनसंचार इत्यादी अभिकरण समाजीकरण प्रक्रिया मे सहाय्यक ठरते है। इनसे कुछ संस्थाएँ ऐसी होती है जो स्वाभाविक रूप से राजनितिक सामाजिकरण करती है। जब की कुछ ऐसी होती है जो औपचारिक रूप से यह कार्य करती है। प्रायः खूले एवं लोकतांत्रिक समाजों मे राजनितिक समाजीकरण मे अनौपचारिक प्रक्रियाओंकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। जब की चीन जैसे साम्यवादी देष मे तथा पाकिस्तान जैसे कट्टरवादी राज्यों मे सरकारी तंत्रो के माध्यम से राजनितिक संस्कृती की जबरदस्ती घुट पिलाई जाती है। उपर्युक्त संस्थाएँ राजनितिक समाजीकरण प्रक्रिया मे कैसे सहाय्यक ठरते है यह विस्तार से देखने के बाद समज में आता है। राजनितिक सामाजीक रण के अभिकरण की जानकारी सविस्तर रूप से निचे दियी गयी है।

1) परिवार :–

समाजीकरण प्रक्रिया मे परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। "क्योंकी बालक परिवार मे ही जन्म लेता है।"[4] और सर्वप्रथम परिवार के सदस्यों के ही संपर्क मे आता है। परिवार मे ही समाज के रितीरिवाज लोकचारों प्रथाओं एवं संस्कृती का ज्ञान कराया जाता है। समाजीकरण करने वाली परिवार यह प्राथमिक संस्था है। बच्चा यदी एकाकी परिवार का सदस्य है तो उसे चार प्रकार की भूमिकाओंका ज्ञान होता है। वे है पति–पिता, पत्नी–माता, पुत्र–भाई और पुत्री–बहन। चूंकी परिवार एक सार्वभौतिक संस्था है। अतः विष्व के सभी समाजोंकी यह आधारभूत संस्था है। परिवार मे बच्चा जो कुछ सीखता है वह उसके जीवन की स्थाई पुँजी होती है। परिवार के सदस्यों मे से ही वह किसी को अपना आदर्ष बना लेता है। भाषा का प्रयोग भी बच्चा परिवार मे ही सीखता है। परिवार मे भिन्न भिन्न स्वभाव के व्यक्ती होते है बच्चा उन सभी के साथ अनूकूल करना सीखता है। अनुकुलन के दौरान उसमे सहिष्णूता का गूण पैदा होता है। परिवार मे सबसे छोटा होने के कारण बालक को दुसरोंके व्यवहारों को सहना पडता है। इससे सहनषिलता पैदा होती है। बालक छोटा होने के कारण बडो की आज्ञा पालन करना पडता है। परिवार मे ही बालक खान पान, वस्त्र धारण करने, अभिवादन करने, पुजापाठ एवं आचरण के नियम सीखता है। "परिवार षिषू की प्रथम पाठषाला है।"

2) क्रिडा समूहः–

परिवार के बाद बालक अपने हमजोलियों एवं खेल के साथियों के संपर्क मे आता है जो उसके हम उम्र होते है। ये लोग उसे उसकी प्रस्थिती एवं वर्ग के मूल्यों से परिचित कराते है। खेल समूह मे बच्चा खेल के नियमोंका पालन करना सीखता है। उसे नेतृत्व के गूण विकसित होते है। वह लोगों को नियंत्रण और अनूषासन मे रहना सीखाता है। खेल मे हार और जीत होने पर परिस्थितीयों से अनुकुलन करना भी बालक सीखता है। बालक खेल के दौरान ही हुआ पारस्पारिक सहयोग, प्रतिस्पर्धा और स्वस्थसंघर्ष की भावना भी ग्रहण करता है। समय आने पर बच्चा कानून और व्यवस्था का प्रतीक बन जाता है। खेल के

नियमों को जब कोई तोडता है तो वह उसका विरोध करता है। तथा स्वयं नियमो का रक्षक बन जाता है। रिजमैन यह मानते है कि खेल समूह वर्तमान समय मे समाजीकरण करनेवाला एक महत्वपूर्ण समूह है। क्योंकी आजकल व्यक्ति मार्गदर्षन एवं दिषा–निर्देष के लिये अपने हम उम्र के लोगो पर अधिक निर्भर करता है। इसलिये व्यक्ति अपने निर्णयो के लिए मित्रों की सलाह को अधिक महत्व देता है। रिजमैन का मतह ै कि आज का व्यक्ति दुसरों द्वारा अधिक निर्देषित होता है जबकि ग्रामिण एवं आदिम समाजों के लोग परस्पर व स्वनिर्देषित होते है। "रिजमैन के अनुसार खेल समूह वर्तमान समय मे समाजीकरण करनेवाला एक महत्वपूर्ण समूह है।" नेतृत्व तथा आज्ञाकारिता के गूणों का विकास भी बच्चो में खेल–कूद समूह से ही होता है।"[5]

3) राजनितिक दलः–

प्रत्येक राजनितीक समाज मे दलील व्यवस्था होती है। भले ही उनका स्वरू प एक दलीय द्विदलीय बहूदलीय हो। राजनितिक दलो द्वारा भी लोगों का राजनितिक समाजीकरण किया जाता है। राजनितिक दल मुद्दों को निष्चित करते है। उम्मीदवारों का चयन करते है। और फिर निवचिकोंसे अपनी नितीयों और कार्यक्रमों के बारे में सूचित करते है और उन पर जनादेष प्राप्त करने की कोषीष करते है। यदि निर्वाचक किसी एक दल को बहूत से चुनते है और उसे सरकार बनाने का जनादेष प्राप्त हो जाता है। यह जनादेष समाजीकरण ही अभिव्यक्ती है। और अनेक विकल्पों मे से एक विकल्प का चयन है। दल चाहे सरकार बनाये या विरोध की स्थिती मे हो कानून मे सुधार लाने मे सक्षम हुए है। और उनकी अंतःक्रिया प्रगती और व्यवस्था मे सामंजस्य लाती है। परंतू राजनितिक दल मतभेदो को तीव्र कर राष्ट्र को दो संघर्षषिल खेमों मे भी बाँट देते है। दल निर्वाचकों को समझाने के बजाए पकडना चाहते है। ब्राइसने सही कहा था की दल के मंच का काम न तो परिभाषा देना है और न ही व्याख्या करना उसका काम तो आकर्षित करना और भ्रमित करना है।[6]

4) जन–संचारः–

रेडिओ, दुरदर्षन और सिनेमा भी लोगों को सार्वजनिक मामलों में षिक्षित कर सकते है। विकसनषिल देषों मे जहाँ पर्याप्त संख्या मे लोग अषिक्षित है, श्रवण दृष्टी संचार ज्ञान और मनोरंजन के महत्वपूर्ण साधन है। सिनेमा तो खास तौर से मनोरंजन का साधन है परंतू रेडिओ और दुरदर्षन मनोरंजन के साथ साथ षिक्षा, ज्ञान और सूचना के स्त्रोत भी है। यदि इनपर निजी स्वामीत्व होता है तो जनसंचार भी एक लाभकारी उद्योग बनकर रह जाता है। यदि इनपर सरकार का नियंत्रण होता है तो वे सरकारी प्रचार के माध्यम बन जाते है। रेडिओ और दुरदर्षन संचार के लोकप्रिय माध्यम है। इनके श्रोता और दर्षक लाखें–करोडो में होते है। जहाँ संचार पर निजी स्वामित्व है केवल बडे पुँजीपती ही रेडिओ, दुरदर्षन के व्यवसाय मे पुँजी लगा सकते है और वे भी उसके कार्यक्रमों पर अपनी इच्छा के अनुसार नियंत्रण लगाने की आवाज से बोलते है तो झूठ और विकृत तर्क को ज्यादा आसानी से छिपा सकते है। हर्मन फायनर का निष्कर्ष है, कोई भी देष, चाहे वह इंग्लंड हो जहाँ रेडिओ–टेलिविजन पर सरकारी नियंत्रण है और चाहे

अमेरिका जहाँ इसे निजी व्यवसाय चलाता है ब्रॉडकास्टिंग की शैक्षणिक क्षमताओं का जितने भारी पैमाने पर संभव है उपयोग नही कर रहा है।"[7]

5) भाषा :–

समाजीकरण मुलतः सामाजिक सीखना की प्रक्रिया है। चाहे सामाजिक सीखना की प्रक्रिया हो या कोई भी अन्य दुसरी प्रक्रिया उसका संपन्न होना इस बात पर निर्भर करता है कि बालकों का बौध्दीक विकास हुआ है या नहीं। बालकों मे बौध्दिक विकास भाषा द्वारा, काफी प्रभावित होता है।[8] भाषा के सहारे बालक एवं किषोर अपने विचार आदर्ष, संस्कृती एवं सामाजिक मुल्यों के बारे में खूलकर दुसरे को बताते है। तथा दुसरे लोगों के विचारों, आदर्षो आदी के बारे में भी ज्ञान प्राप्त करते है। इस तरह के आदान–प्रदान से बालकों मे समाजीकरण की प्रक्रिया तेजीसे होती है। विषेषकर बालकों में यह देखा गया है कि उनका समाजीकरण मातापिता भिन्न–भिन्न शब्दों को उपयूक्त भावभंगिमा के साथ बालकों के सामने बोलते है। बालक उन शब्दों को ध्यानपूर्वक सूनते है। तथा उनकी भाव–भंगिमा का अवलोकन कर उस शब्द का अर्थ समझने की कोषीष करते है। इस प्रक्रिया द्वारा बालक नए–नए सामाजिक व्यवहार को करना धीरे धीरे सीखते जाते है और उनका समाजीकरण होता जाता है।

6) विवाह :–

किशोरावस्था के बाद व्यक्ती वैवाहीक जीवन आरंभ करता है। तब उसे अपने व्यवहारोंमे नये सिरे से संतूलन स्थापित करना पडता है। इस समय उसका उत्तरदायित्व केवल अपने प्रति ही नहीं रहता अपितु पत्नी, बच्चों तथा अन्य संबंधीयों के प्रति भी उसके सामने अनेक नये उत्तरदायित्व आ जाते है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति मे त्याग, सहानूभुती, पारिवारिक कल्याण और दायित्व ग्रहण करने की भावना विकसित होती है। ये सभी दषाएँ समाजीकरण में बहुत सहाय्यक है।[9]

उपसंहार :–

इस प्रकार समाजीकरण प्रक्रिया उपरोक्त अभिकरणों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन सभी अभिकरणों के अतिरिक्त व्यक्ती के किसी अजनबी के संपर्क में आने पर भी उससे एक विषिष्ट प्रकार से व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है। भारत मे व्यक्ति जातीय समूह से भी कई बाते सीखता है। जाती के अनुसार ही उसे खान–पान, छुआछूत विवाह आदी के नियमों का पालन करना होता है। प्रत्येक जाती की अपनी संस्कृती होती है जिसे व्यक्ती को सीखना आवष्यक है। इस प्रकार हम देखते है कि व्यक्ति ज्यों ज्यों बडा हो जाता है उसका सामाजिक दायरा बढता जाता है और अनेक संस्थाओं के माध्यम से उसका समाजीकरण होता जाता है। व्यक्ती का समाजीकरण करने में अनेक कारणों का योगदान होता है। प्रो.डेविस का मत है कि, व्यक्ती दो भिन्नद प्रकार के संचरण की उपज है। अनुवांषिक तथा सामाजिक। माता–पिता के वाहकाणुओ, गुणसुत्र एवं प्रजनन की क्रिया द्वारा व्यक्ती को शरीर एवं शारिरीक क्षमताएँ प्राप्त होती है। जीवविज्ञान की एक शाखा आनुवंषिकी मानव के इस जैविक विरासत का अध्ययनउ करती है।

संदर्भ सूची :–

1) Kailasheducation.com

2) Sarkariguider.in

3) Skillperparation.blogspot.com

4) www.resedublog.in

5) Kailasheducation.com

6) अनुपचंद कपुर, कृष्णकांत मिश्र, राजनिती विज्ञान के सिध्दांत पृष्ठ क्र.449.

7) Finer, Herman, Theory and Practice of Modern Government Page 272.

8) notesnew.com

9) Sarkariguider.in